International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नालन्दा विश्वविद्यालय पर पुनर्विचार

डॉ.ललिता बी.एन., एसोसिएट प्रोफेसर
प्रेसिडेंसी कॉलेज, केंपापुरा, हेब्बाल,बेंगलूरू

शिक्षा के मामले में आज भले ही भारत दुनिया के कई देशों से पीछे हो, लेकिन एक समय था, जब हिन्दुस्तान शिक्षा का केंन्द्र हुआ करता था। भारत में ही दुनिया का पहला विश्वविद्यालय खुला था, जिसे नालंदा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ने की थी। एक समय वह विश्व का सबसे बडा विश्वविद्यालय था।नालंदा विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का एक अद्भुत नमूना है। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी, लेकिन अब यह एक खंडहर बनकर रह चुका है, जहाँ दुनियाभर से लोग घूमने के लिए आते हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापनाः– बिहार के राजगीर में नालंदा की तर्ज पर नई नालंदा यूनिवर्सिटी स्थापित की गई है। नालंदा शब्द संस्कृत के तीन शब्दोंः ना आलम दा के संधि–विच्छेद से बना है। हिन्दी में इसका मतलब ज्ञान रूपी उपहार पर कोई प्रतिबंध न रखना है। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त काल के दौरान पांचवी सदी में हुई थी, लेकिन सन् 1193 में आक्रमण के बाद इसे नेस्तनाबूत कर दिया गया था। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम 450–470 को प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय को हेमंत कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट हर्षवर्द्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। गुप्त वंश के शासक सम्राट कुमारगुप्त ने 5 वीं सदी में नालंदा यूनिवर्सिटी की स्थापना की थी।अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं।

केन्द्रीय विद्यालय में सात बडे कक्ष थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी।

शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्रः– बिहार के नालंदा में स्थित इस विश्वविद्यालय में आठवी शताब्दी से 12 वीं शताब्दी के बीच दुनिया के कई देशों से छात्र पढने आते थे। इस विश्वविद्यालय में करीब 10 हजार छात्र पढते थे, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस और तुर्की से आते थे। यहाँ करीब दो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हजार शिक्षक पढाते थे। मूल नालंदा विश्वविद्यालय 5 वीं से 12 वीं शताब्दी तक शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था। यह अपने विविध पाठ्यक्रम के लिए जाना जाता था और पूरे एशिया से विद्वानों को आकर्षित करता था। यहाँ साहित्य , ज्योतिष, मनोविज्ञान, कानून, एस्ट्रोनॉमी, साइंस , वारॅफेयर, इतिहास,गणित, आर्किटेक्टर, लैंग्वेज साईंस, अर्थशास्त्र, मेडिसिन समेत कई विषय पढाए जाते थे। इस विश्वविद्यालय में कई महान विद्वानों ने पढाई की थी, जिसमें मुख्य रूप से हर्षवर्धन, धर्मपाल, वसुबन्धु, धर्मकीर्ति, आर्यवेद, नागार्जुन का नाम शामिल है। इस विश्वविद्यालय में एक समय में 10 हजार से ज्यादा विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे और 2700 से ज्यादा अध्यापक उन्हें शिक्षा देते थे।

प्रवेश के नियमः—प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। यह विश्व का प्रथम ऐसा दृष्टांत है। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था।इस विश्वविद्यालय की एक खास बात यह थी कि, यहाँ लोकतान्त्रिक प्रणाली से सभी कार्य होता था। कोई भी फैसला सभी की सहमति से लिया जाता था। मतलब, सन्यासियों के साथ टीचर्स और स्टूडेंट्स भी अपनी राय देते थे।

नालंदा के प्रोफेसर बेहतरीन प्रतिभा और क्षमता वाले व्यक्ति थे। वे बुद्ध की शिक्षाओं का दृढता से पालन करते थे। प्रत्येक व्यक्ति को मठ के कठोर प्रतिबंधों का पालन करना आवश्यक था। दिन भर चर्चाएँ होती रहती थी। युवा और वृद्धों ने बारी बारी से एक दूसरे की मदद की। कई शहरों से विद्वान लोग अपने प्रश्नों के समाधान के लिए यहाँ आते थे। द्वारपाल ने नवागंतुकों से चुनौतीपूर्ण पूछताछ की। ऐसी पूछताछ का जवाब देने के बाद ही उन्हें प्रवेश की अनुमति दी जाती थी। 10 में से सात से आठ लोग जवाब नहीं दे पा रहे थे। चौथी शताब्दी में एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में भारत के विकास के प्रति अपने समर्पण के कारण नालंदा कॉलेज ने पहले के समय में महत्वपूर्ण बदनामी सम्मान और महत्व प्राप्त किया और उल्लेखनीय कद पर चढ गया।

पुस्तकालयः—नालंदा में सहस्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए, नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था। जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इस पुस्तकालय में सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें थीं। इस विश्वविद्यालय में 300 कमरे 7 बडे—बडे कक्ष और अध्ययन के लिए 9 मंजिला एक विशाल पुस्तकालय था। जिसमें, एक समय 3 लाख से भी अधिक किताबें मौजूद होती थी।

नालंदा विश्वविद्यालय के तीन महान् पुस्तकालय थे। 1.रत्नोदधि 2.रत्नसागर 3.रत्नरंजक।

छात्रावासः—यहाँ छात्रों के रहने के लिए 300 कक्ष बने थे, जिनमें अकेले या एक सौ अधिक छात्रों के रहने की व्यवस्था थी। एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरे में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबंधन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था।छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक चिंता न थी। उनके लिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र औषधि और उपचार सभी निःशुल्क थे। राज्य की ओर से विश्वविद्यालय को दो सौ गाँव दान में मिले थे, जिनसे प्राप्त आय और अनाज से उसका खर्च चलता थां।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नव नालंदा महाविहारः—यह एक शिक्षण संस्थान है। इसमें पाली साहित्य तथा बौद्ध धर्म की पढाई तथा शोध होती थी। यह एक नया स्थापित संस्थान था। इसमें दूसरे देशों के छात्र भी पढाई के लिए यहाँ आता थे। व्हेनत्सांग मेमोरियल हॉल—यह एक नवनिर्मित भवन है। यह भवन चीन के महान तीर्थयात्री व्हेनत्सांग की स्मृति में बनवाया गया है। इसमें व्हेनसांग से संबंधित वस्तुएँ तथा उनकी मूर्ति देखी जा सकती थी।750 वर्षों से अधिक समय से इसके संकाय में महायान बौद्ध धर्म के कुछ सबसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे। योगाचार और सर्वास्तिवाद के साथ साथ व्याकरण चिकित्सा तर्कशास्त्र और गणित छह मुख्य बौद्ध स्कूलों और दर्शनशास्त्रों में से थे। जो नालंदा महाविहार द्वारा पढाए जाते थे। नालंदा में लिखी गई कई पुस्तकों ने बौद्ध धर्म के महायान और वज्रयान स्कूलों के विकास में योगदान दिया। जब तक मुहम्मद बख्तियार खिलजी की सेना ने इसे लूटा और नष्ट किया। तब तक इसका आंशिक रूप से पुनर्निर्माण किया जा चुका था और यह लगभग 1400 ई. पू. तब जीवित रहा। महायान और वज्रयान परंपराओं सहित तिब्बती बौद्ध धर्म कैसे अस्तित्व में आया। इस पर नालंदा के शिक्षकों और प्रथाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव है। नालंदा में एक शोधकर्ता शांतरक्षित आठवीं शताब्दी में तिब्बत में बौद्ध धर्म के विस्तार के लिए जिम्मेदार थे। तिब्बती सम्राट खी.सून.देउत्सान ने उनका स्वागत किया। बाद में उन्होंने साम्ये में मठ की स्थापना की और संस्था के पहले मठाधीश के रूप में कार्य किया। उन्होंने और उनके छात्र कमलशील ने तिब्बतियों को अनिवार्य रूप से तर्क करना सिखाया। बौद्ध परमाणुवाद के प्रमुख प्रतिपादकों में से एक और साथ ही भारतीय तर्क के बौद्ध दार्शनिकों में से एक शोधकर्ता धर्मकीर्ति ने नालंदा में पढाया था।

नालंदा विश्वविद्यालय का नष्टः:—नालंदा विश्वविद्यालय पर तीन बार आक्रमण हुआ था। परन्तु सबसे विनाशकारी हमला 1193 में हुआ था बख्तियार खिलजी के द्वारा, परिणामस्वरूप सबसे प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय जल कर नष्ट हो गया।नालंदा विश्वविद्यालय को आक्रमणकारियों ने तीन बार नष्ट किया था, लेकिन केवल दो बार ही इसको पुनर्निर्मित किया गया।पहला विनाश स्कंदगुप्त (455—467) ई.वी. के शासनकाल के दौरान मिहिरकुल के तहत ह्यून के कारण हुआ था।लेकिन स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारियों ने पुस्तकालय की मरम्मत करवाई और एक बडी इमारत के साथ सुधार दिया था।दूसरा विनाश 7 वी शताब्दी की शुरूआत में गौदास ने किया था। इस बार बौद्ध राजा हर्षवर्धन (606—648) ने विश्वविद्यालय की मरम्मत करवाई थी।तीसरा और सबसे विनाशकारी हमला इख्तियारूद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी और उसकी सेना के द्वारा किया गया था।तीसरा और सबसे विनाशकारी हमला 1193 में तुर्क सेनापति इख्तियारूद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी और उसकी सेना ने प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया था।ऐसा माना जाता है धार्मिक ग्रंथों के जलने के कारण भारत में एक बडे धर्म के रूप में उभरते हुए बौद्ध धर्म को सैकडों वर्षों तक का झटका लगा था और तब से लेकर अब तक यह पूर्ण रूप से इन घटनाओं से नहीं उभर सका है।

उस समय बख्तियार खिलजी ने उत्तर भारत में बौद्धों द्वारा शासित कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था और एक बार वह काफी बीमार पडा। उसने अपने हकीमों से काफी इलाज

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

करवाया मगर वह ठीक नहीं हो सका और मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया।तभी किसी ने उसको सलाह दी कि नालंदा विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के प्रमुख आचार्य राहुल श्रीभद्र को दिखाए और इलाज करवाए। परन्तु खिलजी इसके लिए तैयार नहीं था।उसे अपने हकीमों पर ज्यादा भरोसा था। वह यह मानने को तैयार नहीं था कि भारतीय वैद्य उसके हकीमों से ज्यादा ज्ञान रखते हैं या ज्यादा काबिल हो सकते है।लेकिन अपनी जान बचाने के लिए उसको नालंदा विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के प्रमुख आचार्य राहुल श्रीभद्र को बुलवाना पडा।फिर बख्तियार खिलजी ने वैद्यनाज के सामने एक अजीब सी शर्त रखी और कहाँ की में उनके द्वारा दी गई किसी भी प्रकार की दवा नहीं खाऊँगा। बिना दवा के वो उसको ठीक करें । वैद्यराज ने सोच कर उसकी शर्त मान ली और कुछ दिनों के बाद वो खिलजी के पास एक कुरान लेकर पहुँचे और कहा कि इस कुरान की पृष्ठ संख्या.....इतने से इतने तक पढ लीजिये ठीक हो जायेंगे।बख्तियार खिलजी ने वैद्यराज के बताए अनुसार कुरान को पढा और ठीक हो गया था।ऐसा कहा जाता हैं कि राहुल श्रीभद्र ने कुरान के कुछ पन्नों पर एक दवा का लेप लगा दिया था, वह थूक के साथ उन पन्नों को पढता गया और ठीक होता चला गया।खिलजी इस तथ्य को परेशान रहने लगा कि एक भारतीय विद्वान और शिक्षक को उनके हकीमों से ज्यादा ज्ञान था।फिर उसने देश से ज्ञान, बौद्ध धर्म और आयुर्वेद की जडों को नष्ट करने का फैसला किया। परिणाम स्वरूप खिलजी ने नालंदा की महान पुस्तकालय में आग लगा दी और लगभग 9 मिलियन पांडुलिपियों को जला दिया।ऐसा कहा जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय में इतनी किताबें थीं कि वह तीन महीने तक जलती रही। इसके बाद खिलजी के आदेश पर तुर्की आक्रमणकारियों ने नालंदा के हजारों धार्मिक विद्वानों और भिक्षुओं की भी हत्या कर दी।

बख्तियार खिलजी के अधीन विनाशः– नालंदा और ओदंतपुरी विहार सहित आसपास के अन्य मठों को ध्वस्त कर दिया गया और घुरिद वंश के सेनापति मुहम्मद बख्तियार खिलजी का पतन शुरू हो गया। तीन स्रोत जो सुसंगत हैं लेकिन उनमें कुछ अंतराल हैं जो संदहे पैदा करते हैं और सटीक तारीख के बारे में थोडी असहमति इस विनाश का समर्थन करती है। एक मुस्लिम इतिहासकार सबूत का पहला टुकडा प्रदान करता है। दूसरा बौद्ध भिक्षुओं के अभिलेख हैं जो तिब्बत में उजागर हुए थे। प्रमाण का तीसरा रूप पुरातात्विक खुदाई से मिलता है जब क्षतिग्रस्त कलाकृति खंडहरों और नालंदा पुस्तकालय के अवशेषों को ढंकते हुए लकडी का कोयला जमा की परतें पाई गईं।

नलंदा विश्वविद्यालय का 800 वर्ष बाद पुनर्जन्मः–नलंदा विश्वविद्यालय का पुनर्गठन, प्राचीन शिक्षा के केंन्द्र को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्जीवित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।इसकी पुनर्स्थापना का विवरण। पुनरूद्धार प्रस्तावः– नालंदा विश्वविद्यालय को पुनजीवित करने का विचार सबसे पहले भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 2006 में प्रस्तावित किया था।विधायी समर्थन–भारतीय संसद ने 2010 में नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया, जो विश्वविद्यालय अधिनिम पारित किया, जो विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।बिहार राज्य सरकार ने प्राचीन विश्वविद्यालय के स्थल के पास राजगीर में नए परिसर के लिए 455 एकड भूमि आवंटित

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की।प्रसिद्ध वास्तुकार पद्म विभूषण स्वर्गीय आर.बी.वी. दोशी द्वारा डिजाइन किए गए नए परिसर की वास्तुकला, प्रकृति और शैक्षणिक वातावरण के बीच संतुलन बनाए रखते हुए एक पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाती है।विश्वविद्यालय की शुरूआत दो स्कूलों–ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल और परिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन स्कूल से हुई। इसका उद्देश्य अपने पाठ्यक्रम का विस्तार करके इसमें विभिन्न अन्य विषयों को शामिल करना है।

प्राचीन मगध में बौद्ध मठीय विश्वविद्यालय नालन्दा प्रसिद्ध था। प्राचीन विश्व में अध्ययन के सबसे महान केंन्द्रों में से एक और इतिहासकार इसे इतिहास का पहला आवासीय विश्वविद्यालय मानते है।चीन के हेनसांग और इत्सिंग ने नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास ढूंढा था। ये दोनों 7 वीं शताब्दी में भारत आए थे। इन्होंने चीन लौटकर नालंदा के बारे में लिखा था और इसे दुनिया का सबसे बडा विश्वविद्यालय बताया था।पाँचवी और छठी शताब्दी ईस्वी में एक ऐसा समय जिसे शिक्षाविदों ने भारत का स्वर्ण युग कहा है। कला और शिक्षा के संरक्षण को आगे बढाने में नालंदा महत्वपूर्ण था। राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के साथ साथ भारत में बौद्ध धर्म के पतन ने एक समय प्रतिष्ठित संस्था की उपेक्षा और परित्याग में योगदान दिया।हाल के दिनों में नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित और पुनस्थापित करने के प्रयास किए गए हैं। 2007 में नालंदा मेंटर ग्रुप की स्थापना और 2010 में भारत सरकार द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम पारित होने के साथ 2000 के दशक की शुरूआत में पुनरूद्धार पहल को गति मिली।पुनरूद्धार परियोजना का उद्देश्य मानविकी, सामाजिक, विज्ञान और पारिस्थितिक अध्ययन में अंतःविषय अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हुए उच्च शिक्षा के लिए एक आधुनिक अंतराष्ट्रीय संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय को फिर से बनाना है। नए नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का निर्माण बिहार के राजगीर में मूल विश्वविद्यालय के प्राचीन स्थल के पास किया गया था।पुनर्जीवित नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ दुनिया भर से संकाय छात्रों और विद्वानों को आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक कार्यक्रम अनंसंधान परियोजनाएँ और वैश्विक संस्थानों के साथ सहयोग शुरू किया है। जबकि पुनर्जीवित नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन संस्थान का नाम और विरासत रखता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह एक अलग संरचना और अकादमिक फोकस वाला एक आधुनिक संस्थान है। यह ज्ञान बौद्धिक आदाप्रदान और सांस्कृतिक जुडाव की भावना को मूर्त रूप देना चाहता है जो प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की विशेषता थी।

1. परिचयः (https://www.amarujala.com/)
2. नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में सक्षिप्त जानकारीः–

(https://hi.wikipedia.org)
3. नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में रोचक

तथ्यः–(https://navbharattimes.indiatimes.com)
4. नालंदा विश्वविद्यालय का नष्ट :–(https://www.jagranjosh.com)
5. नालंदा विश्वविद्यालय का 800 वर्ष बाद पुनर्जन्म (https://www.bing.com)